पाठ – 19

हार की जीत

–श्री सुदर्शन

'हार की जीत' श्री सुदर्शन द्वारा रचित एक कहानी है जिसमें लेखक ने बाबा भारती के चरित्र का ऐसा आदर्श प्रस्तुत किया है, जो श्रेष्ठ मानवीय गुणों से युक्त है। डाकू खड्ग सिंह के छल–कपट को जानकर भी बाबा भारती का उस अपाहिज बने खड्ग सिंह से यह कहना कि 'मेरी प्रार्थना केवल यह है कि इस घटना को किसी के सामने प्रकट न करना, लोगों को यदि इस घटना का पता लग गया तो वे किसी गरीब पर विश्वास न करेंगे, उसके (खड्ग सिंह के) हृदय को झकझोर देता है। बाबा भारती के इस पवित्र और उच्च विचार को सुनकर उसका हृदय परिवर्तित हो जाता है। यही इस कहानी का उद्देश्य है। सुदर्शन जी की यह कहानी मील का पत्थर बनी हुई है।

माँ को अपने बेटे और किसान को अपने लहलहाते खेत देखकर जो आनंद आता है, वही आनंद बाबा भारती को अपना घोड़ा देखकर आता था। वह घोड़ा सुंदर था, बड़ा बलवान था। बाबा भारती उसे 'सुल्तान' कहकर पुकारते, अपने हाथ से खरहरा करते, खुद दाना खिलाते और देख-देख प्रसन्न होते थे। आप गाँव से बाहर छोटे-से मंदिर में रहते थे और भगवान का भजन करते थे। सुल्तान के बिना जीना उनके लिए बहुत ही कठिन था।

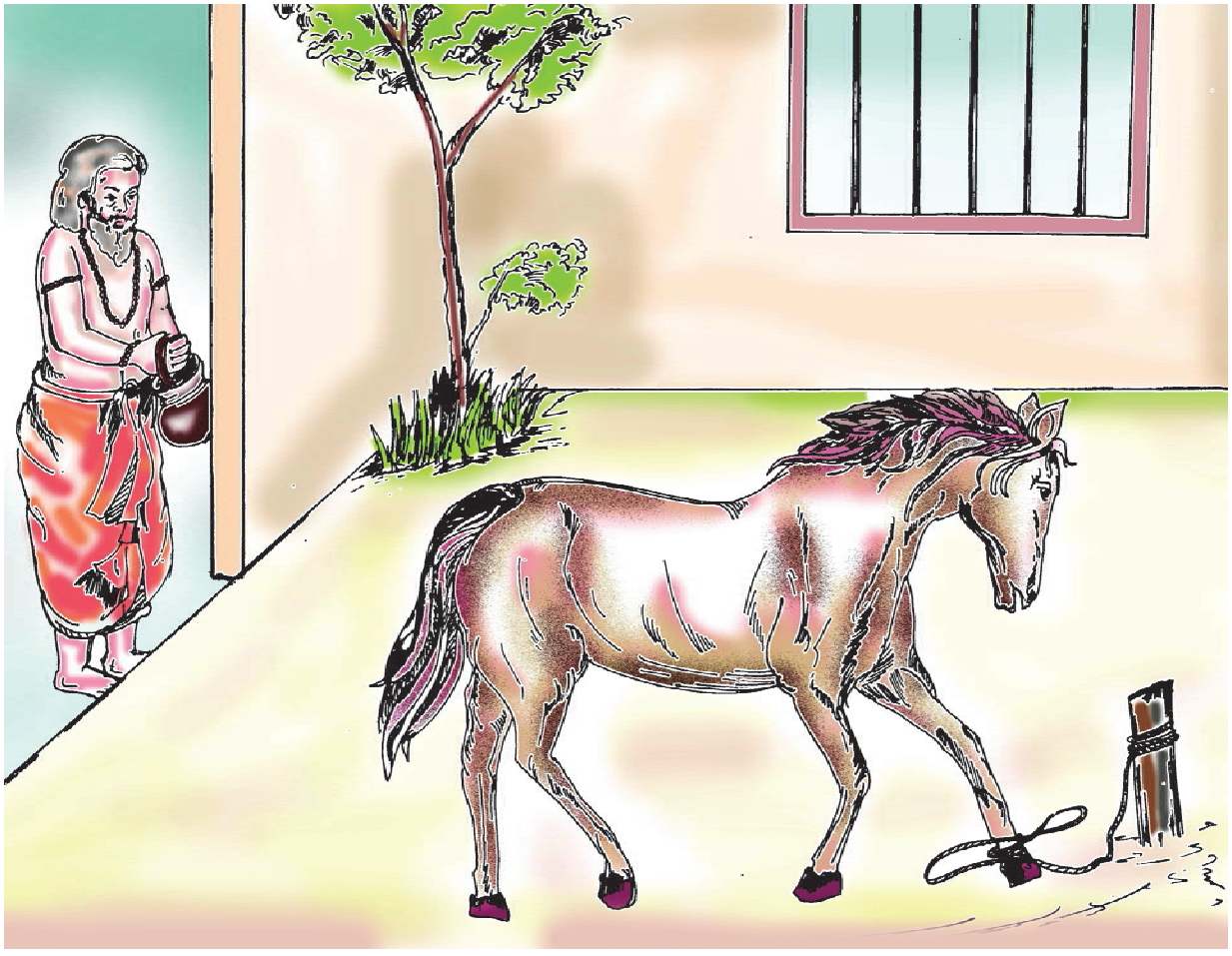

खड्गसिंह उस इलाके का कुख्यात डाकू था। लोग उसका नाम सुनकर काँपते थे। होते-होते सुल्तान की कीर्ति उसके कानों तक भी पहुँची। उसका मन उसे देखने के लिए अधीर हो उठा। वह एक दिन दोपहर के समय बाबा भारती के पास जा पहुँचा और नमस्कार करके बैठ गया।

'कहो, इधर कैसे आ गए ?'

'सुल्तान की चाह खींच लाई।'

'विचित्र जानवर है। देखोगे तो प्रसन्न हो जाओगे।'

'मैंने भी बड़ी प्रशंसा सुनी है।'

'उसकी चाल तुम्हारा मन मोह लेगी।'

'कहते हैं, देखने में भी बड़ा सुंदर है।'

'क्या कहना ! जो उसे एक बार देख लेता है, उसके हृदय पर उसकी छवि अंकित हो जाती है।'

'इच्छा तो बहुत दिनों से थी, लेकिन आज आ सका।'

बाबा भारती और खड्गसिंह अस्तबल में पहुँचे। बाबा ने घोड़ा दिखाया घमंड से और खड्गसिंह ने घोड़ा देखा आश्चर्य से। वह कुछ देर तक चुपचाप खड़ा रहा। उसके हृदय में हलचल होने लगी। बालकों की-सी अधीरता से बोला-''बाबा, इसकी चाल न देखी, तो क्या देखा ?''

बाबा जी भी मनुष्य ही थे। अपनी वस्तु की प्रशंसा दूसरे के मुख से सुनने के लिए उनका हृदय अधीर हो गया। घोड़े को खोलकर बाहर ले गए। घोड़ा वायु-वेग से उड़ने लगा। उसकी चाल देखकर खड्गसिंह के हृदय पर साँप लोट गया। वह डाकू था और जो वस्तु उसे पसंद आ जाए, उस पर वह अपना अधिकार समझता था। जाते-जाते उसने कहा -''बाबा जी, मैं यह घोड़ा आपके पास न रहने दूँगा।''

बाब भारती डर गए। अब उन्हें रात को नींद न आती। सारी रात अस्तबल की रखवाली में कटने लगी। प्रतिक्षण खड्गसिंह का भय लगा रहता। परंतु कई मास बीत गए और वह न आया। यहाँ तक कि बाबा भारती कुछ असावधान हो गए और इस भय को स्वप्न के भय की नाईं मिथ्या समझने लगे।

संध्या का समय था। बाबा भारती सुल्तान की पीठ पर सवार होकर घूमने जा रहे थे। सहसा एक ओर से आवाज़ आई -''ओ बाबा, इस कँगले की सुनते जाना।''

आवाज़ में करुणा थी। बाबा ने घोड़े को रोक लिया। देखा, एक अपाहिज वृक्ष की छाया में पड़ा कराह रहा है। बोले - ''क्यों, तुम्हें क्या कष्ट है ?''

अपाहिज ने हाथ जोड़कर कहा - ''बाबा, मैं दुखिया हूँ। मुझ पर दया कीजिए, रामवाला यहाँ से तीन मील दूर है, मुझे वहाँ जाना है। घोड़े पर चढ़ा लो, परमात्मा भला करेगा।''

''वहाँ तुम्हारा कौन है ?''

''दुर्गादत्त वैद्य का नाम आपने सुना होगा । मैं उनका सौतेला भाई हूँ ।''

बाबा भारती ने घोड़े से उतरकर अपाहिज को घोड़े पर सवार किया और स्वयं उसकी लगाम पकड़कर धीरे–धीरे चलने लगे ।

सहसा उन्हें एक झटका–सा लगा और लगाम हाथ से छूट गई । उनके आश्चर्य का ठिकाना न रहा,जब उन्होंने देखा कि अपाहिज घोड़े की पीठ पर तनकर बैठा है और घोड़े को दौड़ाए लिए जा रहा है । वह खड्गसिंह था ।

बाबा भारती कुछ देर तक चुप रहे और इसके पश्चात् कुछ निश्चय करके पूरे बल से चिल्लाकर बोले – ''ज़रा ठहर जाओ।''

खड्गसिंह ने यह आवाज़ सुनकर घोड़ा रोक दिया और उसकी गर्दन पर प्यार से हाथ फेरते हुए कहा–''बाबा जी, यह घोड़ा अब न दूँगा।''

''परंतु एक बात सुनते जाओ।'' खड्गसिंह ठहर गया। बाबा भारती ने निकट जाकर उसकी ओर ऐसी आँखों से देखा, जैसे बकरा कसाई की ओर देखता है और कहा – ''यह घोड़ा तुम्हारा हो चुका। मैं तुमसे इसे वापस करने के लिए न कहूँगा, परंतु खड्गसिंह केवल एक प्रार्थना करता हूँ। इसे अस्वीकार न करना, नहीं तो मेरा दिल टूट जाएगा।''

''बाबा जी, आज्ञा कीजिए। मैं आपका दास हूँ, केवल यह घोड़ा न दूँगा।''

''अब घोड़े का नाम न लो। मैं तुमसे इसके विषय में कुछ न कहूँगा। मेरी प्रार्थना केवल यह है कि इस घटना को किसी के सामने प्रकट न करना।''

खड्गसिंह का मुँह आश्चर्य से खुला रह गया। उसका विचार था कि उसे घोड़े को लेकर यहाँ से भागना पड़ेगा, परन्तु बाबा भारती ने स्वयं उससे कहा – ''इस घटना को किसी के सामने प्रकट न करना।'' इससे क्या प्रयोजन सिद्ध हो सकता है ? खड्गसिंह ने बहुत सोचा, सिर मारा, परंतु कुछ समझ न सका। हारकर उसने अपनी आँखें बाबा भारती के मुख पर गड़ा दीं और पूछा, ''बाबा जी, इसमें आपको क्या डर है ?''

सुनकर बाबा भारती ने उत्तर दिया – ''लोगों को यदि इस घटना का पता चल गया, तो वे किसी गरीब पर विश्वास न करेंगे ।''

यह कहते–कहते उन्होंने सुल्तान की ओर से इस तरह मुँह मोड़ लिया जैसे उनका उससे कभी कोई संबंध ही न रहा हो ।

बाबा भारती चले गए, परंतु उनके शब्द खड्गसिंह के कानों में उसी प्रकार गूँज रहे थे। सोचता था – कैसे ऊँचे विचार हैं, कैसा पवित्र भाव है ? इन्हें इस घोड़े से प्रेम था, इसे देखकर उनका मुख फूल की नाईं खिल जाता था। कहते थे – 'इसके बिना मैं रह न सकूँ गा ।' इसकी रखवाली में वे कई रात सोए नहीं, भजन–भक्ति न कर रखवाली करते रहे । परन्तु आज उनके मुख पर दुख की रेखा तक न दिखाई पड़ती थी । उन्हें केवल यह ख्याल था कि कहीं लोग गरीबों पर विश्वास करना न छोड़ दें । ऐसा मनुष्य, मनुष्य नहीं, देवता है ।

रात्रि के अंधकार में खड्गसिंह बाबा भारती के मंदिर में पहुँचा । चारों ओर सन्नाटा था । आकाश में तारे टिमटिमा रहे थे । थोड़ी दूर पर गाँव के कुत्ते भौंक रहे थे । मंदिर के अंदर कोई शब्द सुनाई न देता था । खड्गसिंह सुल्तान की बाग पकड़े हुए था । वह धीरे–धीरे अस्तबल के फाटक पर पहुँचा । फाटक खुला पड़ा था । किसी समय बाबा भारती स्वयं लाठी लेकर पहरा देते थे, परन्तु आज उन्हें किसी चोरी, किसी डाके का भय न था । खड्गसिंह ने आगे बढ़कर सुल्तान को उसके स्थान पर बाँध दिया और बाहर निकलकर सावधानी से फाटक बंद कर दिया । इस समय उसकी आँखों में नेकी के आँसू थे ।

रात्रि का तीसरा पहर बीत चुका था । चौथा पहर आरम्भ होते ही बाबा भारती ने अपनी कुटिया से बाहर निकल ठंडे जल से स्नान किया । उसके पश्चात् इस प्रकार, जैसे कोई स्वप्न में चल रहा हो, उनके पाँव अस्तबल की ओर बढ़े, परंतु फाटक पर पहुँचकर उनको अपनी भूल प्रतीत हुई, साथ ही घोर निराशा ने पाँवों को मन–मनभर का भारी बना दिया । वे वहीं रुक गए । घोड़े ने अपने स्वामी के पाँवों की चाप को पहचान लिया । वह ज़ोर से हिनहिनाया ।

अब बाबा भारती आश्चर्य और प्रसन्नता से दौड़ते अंदर घुसे और अपने प्यारे घोड़े के गले से लिपटकर इस प्रकार रोने लगे मानो कोई पिता बहुत दिनों से बिछुड़े हुए पुत्र से मिल रहा हो । बार–बार उसके मुँह पर थपकियाँ देते ।

फिर वे संतोष से बोले – ''अब कोई गरीबों की सहायता से मुँह न मोड़ेगा ।''

शब्दार्थ – **खरहरा** – लकड़ी की कंघी, **अधीर** – व्याकुल, **अंकित** – निशान, **प्रयोजन** – उद्देश्य ।

अभ्यास

पाठ से

1. सुल्तान कौन था?
2. खड्ग सिंह कौन था? लोग उससे क्यों डरते थे?
3. बाबा भारती को अपना घोड़ा देखकर किस प्रकार का आनन्द आता था?
4. बाबा भारती का सुल्तान के प्रति किस प्रकार का प्रेम था?
5. खड्ग सिंह सुल्तान को क्यों देखना चाहता था?

6. बाबा भारती ने खड्ग सिंह से सुल्तान के किन गुणों का बखान किया?
7. 'बाबा, इसकी चाल न देखी, तो क्या देखा'? खड्ग सिंह ने ऐसा क्यों कहा?
8. सुल्तान को प्राप्त करने के लिए डाकू खड्ग सिंह ने क्या चाल चली?
9. बाबा भारती के किस कथन को सुनकर डाकू खड्ग सिंह का हृदय–परिवर्तन हुआ?
10. ''अब कोई गरीबों की सहायता से मुँह न मोड़ेगा।'' बाबा भारती ने ऐसा कब और क्यों कहा?
11. **निम्नांकित कथन किसने, किससे, कब कहे ?**
    - क. ''सुल्तान की चाह खींच लाई।''
    - ख. ''उसकी चाल तुम्हारा मन मोह लेगी।''
    - ग. ''बाबा, मैं दुखिया हूँ, मुझ पर दया कीजिए।''
    - घ. ''इसके बिना मैं रह न सकूँगा।''

पाठ से आगे

4IYHSJ

1. बाबा भारती ने खड्ग सिंह से घटना के बारे में किसी से न कहने को क्यों कहा होगा? विचार कर लिखिए।
2. बाबा भारती का सुल्तान के साथ पिता–पुत्र की तरह रिश्ता था। वैसे ही माँ–बेटे का भी रिश्ता होता है। अगर पुत्र माँ से अलग हो जाये, तो माँ की मनः स्थिति कैसी होती होगी। अपनी माँ से चर्चा कर लिखिए।
3. ''हार की जीत'' कहानी को पढ़ने के बाद, क्या आप किसी गरीब की सहायता करेंगे? कक्षा में चर्चा कर लिखिए।
4. इस कहानी में हार कर भी कौन जीता और जीतकर भी कौन हारा और क्यों कारण सहित लिखिए।

भाषा से

1. हार की जीत पाठ में 'अस्तबल' 'आस्तिक' आदि शब्दों का प्रयोग हुआ है। घोड़ा बाँधने का स्थान 'अस्तबल' तथा जो ईश्वर पर विश्वास करता हो, 'आस्तिक' कहलाता है। ठीक इसी तरह अब आप निम्न वाक्यांशो के लिए एक–एक शब्द बनाइये –

    1. घोड़े पर सवारी करने वाला।
    2. प्रशंसा करने वाला।
    3. पहरा देने वाला।

2. **इन्हें भी समझिए–**

(क) योजक चिह्न (–) का प्रयोग दो शब्दों को जोड़ने के लिए होता है। उदा. – भजन–पूजन (दोनों शब्द योजक चिह्न से मिलकर पूर्ण पद बनाते हैं।

(ख) विपरीतार्थ शब्दों के बीच जैसे– बुराई–भलाई, भले–बुरे, ऊँच–नीच।

ग. जब दो शब्दों में एक सार्थक और दूसरा निरर्थक हो, जैसे– रोटी–मोटी, अनाप–शनाप।

घ. दो क्रियाओं के बीच – जैसे–मिलना–जुलना, पढ़ना–लिखना।

ङ. एक ही संज्ञा दो बार प्रयोग हो– जैसे– द्वार–द्वार, नगर–नगर, बात–बात आदि।

ऐसे ही पाठ में आए योजक चिह्न लगे शब्दों को छाँटकर लिखिए।

3. 'अग्र का पश्च', 'आकाश का पाताल' विलोम है। जिसका अर्थ है विपरीत अर्थ वाला या उल्टे क्रम से उत्पन्न। किसी शब्द का विपरीत अर्थ वाला शब्द विलोम शब्द कहलाता है।

सुंदर, पसंद, मिथ्या, भला, विश्वास, सावधानी, रोना जैसे (पाठ में आए) शब्दों के विलोम शब्द लिखिये।

4. पाठ में प्रसन्नता शब्द आया है जो कि भाव वाचक संज्ञा है यह शब्द प्रसन्न विशेषण में 'ता' प्रत्यय लगाने से बना है अर्थात् खुश होने का भाव। इस प्रकार 'ता' प्रत्यय का प्रयोग करते हुए दस भाववाचक संज्ञा बनाइये।

5. **निम्नांकित वाक्यों को निर्देशानुसार बदलिए।**

क. घोड़ा सुंदर था। (वर्तमान काल)

ख. खड्ग सिंह इस इलाके का कुख्यात डाकू था। (वर्तमान काल)

ग. वहाँ तुम्हारा कौन है ? (भूतकाल)

घ. घोड़ा हिनहिना रहा होगा। (वर्तमान काल)

ङ. मैंने भी प्रशंसा सुनी है। (भूत काल)

6. **निम्नलिखित वाक्यों में उचित स्थान पर विराम चिह्न लगाइए।**

क. कामायनी की कथा संक्षेप में लिखिए

ख. किशोर भारती का प्रकाशन हर महीने होता है

ग. आप कहाँ से आ रहे हैं

घ. आपकी शक्ल आपके बड़े भाई से मिलती जुलती है

ङ. जीवन में हारना जीतना तो लगा ही रहता है

7. निम्नलिखित अवतरण को पढ़िए और रिक्त स्थानों की पूर्ति नीचे दिए गए शब्दों की सहायता से कीजिए–

बाबा भारती एक छोटे–से मंदिर ..... रहते थे। सुल्तान नामक घोड़े ..... वे बहुत चाहते थे। उसी क्षेत्र में खड्गसिंह ..... रहता था। वह घोड़ा देखने के लिए बाबा ..... के पास पहुँचा। उसने बाबा भारती से ..... ''मैं यह घोड़ा आपके पास नहीं ..... दूँगा।'' बाबा भारती इस धमकी से ..... रहने लगे। छह महीने बीत गए ..... खड्गसिंह नहीं आया। एक दिन ..... घोड़े पर सवार ..... जा रहे थे। रास्ते में एक ..... के नीचे एक अपाहिज पड़ा था। ..... बाबा से विनती की, ''मैं अपाहिज .....। मुझे रामवाला गाँव जाना है। कृपया ..... घोड़े पर चढ़ा लें।'' उन्होंने अपाहिज को घोड़े पर चढ़ा ..... और स्वयं उसकी लगाम पकड़कर चलने .....। अचानक उन्हें

झटका लगा। सवार घोड़े ..... भगाए लिए जा रहा था। वह ..... था। उन्होंने उसे रोकर कहा, '' घोड़ा ..... हो गया। लेकिन इस बात की ..... किसी से नहीं करना।'' बाबा भारती ..... . मंदिर पर वापस आ गए। खड्गसिंह ..... कथन पर विचार करता रहा। उसका ..... परिवर्तन हो गया। रात्रि के अंधकार ..... वह घोड़े को अस्तबल में लाकर बाँध..... । सुबह बाबा भारती स्नान करने ..... । उनके कदम स्वतः अस्तबल की ओर ..... । अस्तबल पर पहुँचकर उन्हें अपनी गलती ..... हुई। घोड़े ..... अपने स्वामी की पदचाप पहचान ली। ..... हिनहिनाया। बाबा भारती दौड़कर अस्तबल में ..... और जाकर घोड़े से लिपट गए। ..... मुँह से निकल पड़ा, ''अब कोई ..... की सहायता से मुँह नहीं मोड़ेगा।'' (चर्चा / बाबाजी / चले / उनके / महसूस / लेकिन / में / डाकू / होकर / पेड़ / मुझे / गरीबों / हृदय / गया / वह / में / को / चिंतित / उसने / हूँ / तुम्हारा / खड्गसिंह / लिया / लगे / गए / कहा / रहने / ने / में / को / भारती / अपने / बढ़े।)

योग्यता विस्तार

4JH9VU

1. मनुष्य और पशु के बीच प्रेम को पाठ में प्रमुखता से दिया गया है। शिक्षक की सहायता से ऐसे अन्य पाठ ढूँढकर पढ़िए जिसमें पशु प्रेम की कहानियाँ हों। जैसे – महादेवी वर्मा की कहानी गौरा, गिल्लू।
2. इस कहानी में बाबा भारती और खड्ग सिंह के बीच जो वार्तालाप हुआ, उसका कक्षा में अभिनय कीजिए।
3. गौतम बुद्ध के साथ बातचीत में अंगुलिमल का हृदय परिवर्तन हुआ था। यह कहानी खोजकर पढ़िए।
4. इस कहानी को संक्षेप में कक्षा में सुनाइए।

●●●